International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 275-276

उत्तर वैदिक काल में नैतिकता

डॉ. आशुतोष कुमार सिंह
सहायक आचार्य (तदर्थ), प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, डी.ए.वी.पी.जी. कॉलेज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

नैतिकता मानवीय सद्गुणों को प्रदर्शित करने वाला सामाजिक तत्व है जिससे सभ्य समाज का निर्माण किया जा सकता है। यह व्यक्ति के अंतः करण द्वारा उचित अनुचित का बोध है। प्रो. कोपर के अनुसार नैतिकता के साथ व्यवहार के कुछ नियम जुड़े हैं। जैसी–चोरी न करना, बड़ों का सम्मान करना, किसी की हत्या न करना आदि। नैतिकता अच्छाई और बुराई का बोध कराती है। नैतिकता के नियमों का उल्लंघन करने पर व्यक्ति का अंतकरण उसे धिक्कारता है। नैतिकता के पीछे सामाजिक शक्ति होती है। इस प्रकार नैतिकता व्यवहार के वह नियम हैं जो व्यक्ति में उचित–अनुचित का भाव जगाते हैं। नैतिकता व्यक्ति के अन्तःकरण की आवाज है। यह सामाजिक व्यवहार का उचित प्रतिमान है। इसके साथ समाज की शक्ति जुड़ी होती है। यह तर्क पर आधारित है और इसका सम्बन्ध किसी अदृश्य पारलौकिक शक्ति से नहीं होता है। नैतिकता परिवर्तनशील है, इसके नियम देश, काल और परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं। इसका सम्बन्ध समाज से है, समाज जिसे ठीक मानता है, वही नैतिक है। नैतिक मूल्यों का पालन व्यक्ति स्वेच्छा से करता है, किसी ईश्वरीय शक्ति के भय से नहीं। नैतिकता व्यक्ति के कर्तव्य और चरित्र से जुड़ी है। नैतिकता का आधार पवित्रता, ईमानदारी और सत्यता आदि गुण होते हैं। नैतिकता कभी–कभी धर्म के नियमों का प्रतिपादन करती प्रतीत होती है।

भारत जैसे अध्यात्मप्रधान संस्कृति वाले देश में नैतिकता को अत्यन्त प्राचीन काल से ही विशेष महत्व दिया जाता रहा है। हमारे यहाँ वैदिक काल में नैतिक मूल्यों की स्थापना की जा चुकी थी जिनका ग्रंथों में विस्तार पूर्वक वर्णन देखा जा सकता है। आर्यों की स्वयं की संस्कृति, वैदिक संस्कृति थी जो अद्यतन उतनी ही सशक्त, सुव्यवस्थित, सुसंगठित और अनुशासित है जितनी कि सृष्टि के उदय के समय। इसी कारणवश वैदिक संस्कृति को विश्व–पटल पर आज भी सम्मानित दृष्टि से देखा जाता है। आर्यों ने यम (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) व नियम (शौच, संतोष, स्वाध्याय, ईश्वर–प्राणिधान, तप) का प्रावधान व्यक्ति को सदाचार के मार्ग पर चलने के लिए ही किया था। मानव जीवन का प्रमुख उद्देश्य–धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष था और इनकी पूर्ति पंच महायज्ञों से होती थी लेकिन इन यज्ञों में प्रवृत्त होने से पूर्व मानव को संस्कारित होना पड़ता था जिसके लिए सोलह संस्कारों का विधान किया था। ये सभी तत्व नैतिकता से जुड़े हुए थे।

ब्राह्मण ग्रंथों की मुख्य नैतिक शिक्षा यह है कि जीवन का उद्देश्य समाज के प्रति अपने कर्तव्यों की पूर्ति है। इनके अनुसार नैतिक जीवन बिताने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को चोरी,व्याभिचार और हत्या से बचना चाहिए। एक प्रसंग में कहा गया है कि भूख, स्त्रियों, जुए और निद्रा के वश में होकर मनुष्य अनेक पाप करते हैं। कतिपय ब्राह्मण ग्रंथों में प्रजापति के अपनी पुत्री के साथ सहवास का उल्लेख है। इसके साथ ही यह कहा गया है कि अन्य देवताओं ने प्रजापति के इस कार्य कि बहुत निंदा की। उत्तर वैदिक कालीन आर्यों का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति यज्ञ करके देवताओं के ऋण से, ज्ञान का प्रसार और रक्षा करके ऋषियों के ऋण से मुक्त हो सकता है।[1] *यजुर्वेद* के एक मन्त्र में उल्लेख आता है कि यह सब जो कुछ पृथ्वी पर चराचर वस्तु है, ईश्वर से आच्छादित है। उसी ईश्वर के दिए हुए पदार्थों का भोग कर अन्य किसी के धन की लालच मत कर।[2] अर्थात् किसी व्यक्ति को परमात्मा ने जो धन संपत्ति दी है उसे उसी से संतुष्ट रहना चाहिए। लोभ या लालचवश दूसरे की धन–संपत्ति लेने की इच्छा से चोरी या बेईमानी नहीं करनी चाहिए। आजीविका हेतु अर्जित धन ईमानदारीपूर्वक होना चाहिए।

ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार हमारे सभी कार्य निःस्वार्थ भाव से होने चाहिए। ब्राह्मण ग्रंथों में सर्वमेध यज्ञ की चर्चा की गयी है जिसमे आत्मा को मोक्ष प्राप्त कराने की इच्छा से व्यक्ति अपना सर्वस्वा त्याग देता था। ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार कर्तव्य पालन, माता–पिता का आदर, मनुष्य मात्रा से प्रेम और चोरी, व्यभिचार व हत्या से बचना आदर्श जीवन के लिए आवश्यक थे । वाणी और कर्म दोनों में सत्य का पालन करना ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार नैतिक जीवन की आधार शिला है।[3] उत्तर वैदिक काल में यह भावना कि इस जन्म में अच्छा कर्म करने से मृत्यु के पश्चात सुख और बुरा कार्य करने से दुःख मिलेगा, इस बात को पूर्णतया मान लिया गया था।[4] अतिथि की सेवा सुश्रूषा को इस काल में इतना महत्व दिया जाता था कि *अथर्ववेद* के अनेक सम्पूर्ण सूक्त में इसी का विवेचन है।[5] *अथर्ववेद* में सती प्रथा का उल्लेख है[6] किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इस काल में इसे अच्छा नहीं समझा जाता था। कुछ ग्रंथों में विधवा विवाह कि अनुमति दी गयी है। इसी वेद में सुरापान को द्यूतक्रीड़ा व मांसभक्षण के सामान बुरा कहा गया है[7] क्योंकि सुरापान से मनुष्य दूसरों के साथ झगड़ा करता है और सदाचार से भ्रष्ट हो जाता है। किन्तु अथर्ववेद से यह भी ज्ञात होता है कि मद्य जनसाधारण का पेय था।[8] *शतपथ ब्राह्मण* के अनुसार परीक्षित के राज्यकाल में कुरुदेश के राजपरिवार के सदस्य मद्यपान के शौकीन थे।

ब्राह्मण ग्रंथों से पता चलता है कि अधिकतर व्यक्ति जीवन में पूर्ण नैतिकता का पालन करते थे। कन्याओं का विक्रय होता था किन्तु आर्य समाज में इसे बुरा माना जाता था। स्त्रियों कि स्थिति समाज में पुरुषों कि अपेक्षा निश्चयतः निम्न थी। वे पति के भोजन के पश्चात भोजन करती थीं और पति को कभी भी प्रत्युत्तर नहीं देती थीं।[9] *ऐतरेय ब्राह्मण* के अनुसार पुत्र परिवार की रक्षा करता है पुत्री परिवार के लिए दुःख का स्रोत होती है।[10] वैदिक काल में दासों और दासियों को कोई मानवाधिकार प्राप्त न थे। उनका स्वामी उनको किसी भी व्यक्ति को चल संपत्ति की भाँति भेंट में दे सकता था।

उपनिषदों के अनुसार परमात्मा सब व्यक्तियों की आत्मा में व्याप्त है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों से प्रेम करना चाहिए। *कठोपनिषद* में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जिस व्यक्ति ने बुरे कार्यों को नहीं छोड़ा है, जिसमें आतंरिक शांति नहीं है, जिसके चित्त में संतुलन नहीं है, वह कभी भी आत्मज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता।[11] उपनिषदों में नैतिक जीवन व्यतीत करने के लिए सत्य, कर्तव्य पालन, आत्मसंयम, करुणा और उदारता[12] आदि गुणों पर बल दिया गया है। छान्दोग्य उपनिषद में कैकय देश के राजा अश्वपति कहते हैं कि मेरे राज्य में कोई चोर, कंजूस, नीच या शराबी, परस्त्रीगामी व्यक्ति नहीं है। सभी द्विज अग्निहोत्र करते हैं। उनमें कोई अशिक्षित नहीं है। इसलिए जब व्याभिचारी पुरुष ही नहीं हैं तो किसी व्याभिचारिणी स्त्री या वेश्या (स्वैरिणी) के विद्यमान होने का प्रश्न ही नहीं उठता।[13]

इस प्रकार उत्तर वैदिक काल में नैतिकता सम्बन्धी दृष्टिकोण को लेकर हमारे ऋषि–मुनि सजग थे। समाज को सुचारु ढंग से संचालित करने के लिए व्यक्ति का सदाचारी, संयमी होना आवश्यक था। इसीलिए हमारे शास्त्रकारों ने नैतिकता पर विशेष बल दिया है।

संदर्भ

1. शतपथ ब्राह्मण, 1/7/2/1–6.
2. यजुर्वेद, 40/1.
3. वी. एम. आप्टे, द वैदिक एज़ (हिस्ट्री ऐण्ड कल्चर ऑफ द इण्डियन पीपल, जिल्द 1), बम्बई, 1957, पृ. 449.
4. शतपथ ब्राह्मण, 12/9/1/9.
5. अथर्ववेद, 9/6–11.
6. अथर्ववेद, 18/3/2.
7. अथर्ववेद, 6/70/1.
8. अथर्ववेद, 20/127/7–10.
9. ऐतरेय ब्राह्मण, 3/24/7.
10. ऐतरेय ब्राह्मण, 7/13.
11. कठोपनिषद, 1/2/18.
12. वृहदारण्यक उपनिषद, 5/2.
13. छान्दोग्य उपनिषद, 5/11/5.